१ ओअंकार (੧ੴ) सति गुर प्रसादि

इसाई मत और गुरमति

मूल रूप में

सिक्ख मिशनरी कॉलेज (रजि.)
लुधियाना द्वारा प्रकाशित पुस्तक

क्रांतिकारी जगत् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

लॉन्च करता : जसबीर सिंघ
Mob. : 099881-60484, 62390-45985

Type Setting : Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149- 66882

Download Free

इसाई मत और गुरमति

सरदार कृपाल सिंघ 'चंदन'

अनुवाद : स. कुलबीर सिंघ, नई दिल्ली

संसार के अन्य प्रसिद्ध धर्मो की भांति इसाई धर्म का जन्म भी एशिया में हुआ और यह धर्म यूरोप में बढ़ा-फूला। इसाई प्रचारकों के प्रयत्नों के फलस्वरूप अब यह धर्म सारे संसार में फैल चुका है और इसके अनुयाइयों की संख्या के लिहाज से यह सब से बड़ा धर्म माना जाता है।

इस धर्म का नाम, इसके संस्थापक ईसा (**यीसू मसीह, क्राईस्ट**) से पड़ा है। इस धर्म के सिद्धांतों की जानकारी देने और उनकी गुरमत के साथ तुलना करने से पूर्व, हम ईसा मसीह के जीवन पर संक्षेप में प्रकाश डालना जरूरी समझते हैं।

ईसा जी का जीवन :

ईसा जी का जन्म, यहूदियों के देश फिलस्तीन के शहर बैथलहम में सन् 6 ई. पूर्व में, कुंवारी कन्या मेरी की कोख से हुआ। वह यूसफ नाम के बढ़ई की मंगेतर थी।

यहूदियों के धर्म ग्रंथ पुराने नियम *(Old Testament)* में यह भविष्य वाणी पहले ही अंकित थी कि दुनियां की मुक्ति का दाता एक कंजक यानी क्वारी के घर में पैदा होगा। यह ग्रंथ बाइबल का प्रथम भाग है।

बाईबल में लिखे अनुसार ज़बराईल फरिश्ते ने कुंवारी मेरी को कहा था -''मेरी! तूं पवित्र रूह के द्वारा गर्भवती होगी और बैथलहम में एक धर्म प्रचारक पुत्र को जन्म देगी।'' ईसा के जन्म के पश्चात, उसके पिता यूसफ को अपनी मंगेतर पर शक हुआ, पर फरिश्ते ज़बराईल के समझाने पर उसकी तसल्ली हो गई और वह मेरी और बाल यीसू को अपने घर ले आया।

उन्हीं दिनों फिलस्तीन पर हीरोड नाम का राजा राज्य करता था। उसको कुछ ज्योतिषियों ने ईसा के जन्म की, यह कह कर सूचना दी कि उसके राज्य में किसी स्थान पर यहूदियों का बादशाह पैदा हो गया है। हीरोड यहूदियों का शत्रु तथा अत्याचारी राजा था। उसने आदेश दिया कि यूरोशलम में दो सालों से छोटी आयु के सभी बच्चे कत्ल कर दिये जाये। यूसफ और मेरी बाल यूसफ को लेकर मिश्र देश में आ गए। पर मिश्र आने से पूर्व वे यहूदियों के धर्म स्थान यूरोशलम में गए और अपना बच्चा ईश्वर की सेवा के लिए अर्पण किया, जैसा कि तब पहला बच्चा अर्पित करने का रिवाज था।

हीरोड की मृत्यु के पश्चात यूसफ व मेरी, वापिस देश आ गए और नज़रेब नाम के शहर में रहन लगे।

12 वर्षो की आयु में, बाल यीसू ने यूरोशलम के मंदिर में विद्वानों के साथ धर्म-चर्चा की और उनको अपनी तीक्ष्ण बुद्धि द्वारा चकित कर दिया।

30 साल की आयु में ईसा ने अपने चचेरे भाई जौहन (जॉन) से जार्डन नदी के किनारे बपतिस्मा (Baptism- दीक्षा, इसाइयों का अमृत) लिया । नदी से बाहर आते समय आकाश से पवित्र आत्मा, कबूतर की तरह ईसा जी पर आ टिकी और (बाईबल के अनुसार) स्वर्गो के आवाज आई, 'ईसा परमात्मा का पुत्र है।' फिर ईसा जी 40 दिन लगातार प्रार्थना में जुड़े रहे और तपस्या साधी।

जौहन, जिस से ईसा ने बपतिस्मा लिया था, एक धड़लेदार प्रचारक था। वह गुनाहों से तौबा करने, हृदय को पाप-मुक्त करके पवित्र बनाने, त्याग का जीवन व्यतीत करने और भौतिक इच्छाओं को नियंत्रित करने का उपदेश दिया करता था। वह यह भी कहता था कि लोगों को क्यामत के दिन के लिए तैयार करना चाहिए, जिस दिन उनके किये गए कर्मो का फैसला होगा। वह सभ से महत्वपूर्ण बात यह कहा करता था कि पुराने नियम भी भविष्य बाणी के अनुसार यहूदियों का मुक्तिदाता (ईसा मसीह) प्रकट होने वाला है, और जल्द ही दुनियां में ईश्वर का राज्य स्थापित हो जाएगा। यहूदियों के समय के बादशाह को यह बात पसंद नहीं थी कि कोई यहूदियों का मुक्तिदाता आए और ईश्वर की पातशाही यानी सत्ता कायम कर ले। उसने जौहन को कैद कर लिया। जौहन पर यह दोश लगाया गया कि वह धर्म प्रचार के नाम पर लोगों को सरकार के विरुद्ध बागी बना रहा है। बाद में उसकी कत्ल कर दिया गया।

जौहन के कैद होने के पश्चात बपतिस्मा देने का काम ईसा ने स्वयं आरंभ कर दिया। उसने कई करामातें दिखला कर अपनी आत्मिक शक्ति का प्रदर्शन किया- जैसे कि पानी को शराब में बदल देना, तेज तूफान को बंद करना और रोगी का चमत्कारी इलाज करना आदि। उस की सेवा का पहला पड़ाव तब समाप्त हुआ, जब लोगों ने यह मान लिया- ''हम जानते हैं कि यह (ईसा) सचमुच ही संसार का रक्षक है।''

एक बार ईसा का उपदेश सुनने के लिए बहुत बड़ी भीड़ एकत्र हो गई। वह पहाड़ी पर चढ़ गए। वहां पर जो उन्होंने उपदेश दिया उसको 'टीले का उपदेश'(Sermon on the Mount) कहा जाता है। उसने कहा कि वह लोग धन्य हैं जो मन की नम्रता के धारणकर्ता हैं, शांति की प्राप्ति के इच्छुक हैं, धर्मात्मा बनना चाहते हैं, दयावान हैं, जिन के हृदय शुद्ध हैं और जो धर्म की खातिर दु:ख व कष्ट सहते हैं।

ईसा जी ने बार बार एलान किया कि उस को प्रभु ने गुमराह हुए लोगों को सीधे रास्ते पर डालने के लिए भेजा है और उसको लोगों के गुनाह क्षमा करने का अधिकार दिया है। ईसा जी ने अपने श्रद्धालुओं में से 12 विशेष अनुयाइयों को चुन लिया और उनको अपने (उसके) रसूल (Apostle) बनने की शिक्षा दी अथवा प्रशिक्षित किया।

प्रभावशाली उपदेशों, निर्भयता, दृढ़ता, बीमारी को ठीक करने और अन्य चमत्कार दिखलाने के कारण ईसा सारे गलील में हरमन प्यारा हो गया। लोगों ने उसका राजा बनाना चाहा। पर उसने इनकार कर दिया इस कारण बहुत से श्रद्धालु इससे नाराज हो गए और उसका साथ छोड़ गए। इस समय उस ने अपने बारह रसूलों को एकत्र किया और पूछा- ''मैं क्या हूँ?उनमें से पीटर नाम के रसूल ने उत्तर दिया -''आप मसीह हो, जिंदा परमात्मा के पुत्र।''

ईसा ने अपने चेलों को आने वाले दुखों, कष्टों और मृत्यु के लिए तैयार करना आरंभ कर दिया और कहा कि अंतिम विजय उनकी ही होगी, इसलिए फिक्र नहीं करना चाहिए।

ईसा जी के प्रचार के कारण यहूदी हाकिम उनके विरोधी बन गए। उन पर कई प्रकार के दोष लगाए गए। कट्टड़ और पुरातनपंथी यहूदी भी विरोधी बन गए।

फिर ईसा जी यूरोशलम में मसीहा के तौर पर दाखिल हुए। माया के लोभी पुजारियों का डट कर विरोध किया और हाकिमों की मंद भावना को प्रकट किया। लोगों को आने वाले खतरों से अवगत करवाया। उस ने अपने रसूलों के पैर धोए और उनको नम्रता का पाठ पढ़ाया । उसने यह भी कहा कि जुड्डा नाम का रसूल धोखा देगा। फिर ब्रहम भोज (Lord's Supper) चालू किया, और अपने सभी श्रद्धालुओं के लिए प्रभु के पास प्रार्थना की।

जुड्डा ने विरोधियों की योजना में शमिल हो कर, ईसा जी को कैद करवा दिया। सरकार द्वारा उन पर दो इलज़ाम लगाए गए:

(1) ईसा एक काफिर है क्योंकि वह ईश्वर का पुत्र होने का दावा करता है।

(2) ईसा रोमन सरकार का बाग़ी है क्योंकि वह नई पातशाही यानी सत्ता स्थापित करने का प्रचार करता रहा है।

उपरोक्त दोष लगा कर ईसा को मौत की सज़ा सुनाई गई।

अधिकारी उनको एक हाल में ले गए। उनके कपड़े उतार कर कोड़े मारे गए। उनका उपहास करने के लिए उनके सिर पर कांटों का ताज पहनाया गया। फिर उनको सूली पर चढ़ा कर फांसी दे दी गई और एक मकबरे में दफना दिया गया।

बाईबल के अभिलेख के अनुसार ईसा जी तीसरे दिन फिर पुनर्जीवित हो गए और 40 दिनों तक अपने रसूलों को दर्शन देते रहे और अंत में आशीर्वाद दे कर और पवित्र आत्मा भेजने का इकरार करके स्वर्ग में चले गए।

धार्मिक ग्रंथ :

इसाइयों का धर्म ग्रंथ बाईबल (इंजील) के नाम से जाना जाता है। वास्तव में यह यहूदियों व इसाइयों का साझा धर्म ग्रंथ है। इस के दो भाग हैं- पुराना अहिदनामा (नियम) और नया अहिदनामा (Old Testament and New Testament (टैस्मामैंट का अर्थ है कोनवेंट या एग्रीमैंट (समझौता) । पुराने अहिदनामे (Old Testament) का भाव इसाइयों से पूर्व कहे जाने वाले समझौते से है जो यहूदियों के ईश्वर याहोवा ने मनुष्य के साथ किया था। बाईबल के इस हिस्से में ईसा जी के जन्म से पूर्व के हालात अंकित हैं और उनके जन्म के बारे में भविष्य वाणी भी अंकित है। इस भाग में कुल मिला कर 39 पुस्तकें हैं।

बाईबल के दूसरे हिस्से New Testament में ईसा जी का जीवन, शिक्षांए और उनके पहले-पहले बने चेलों (रसूलों) के अनुभव और विचार दर्ज हैं। इस भाग में 27 पुस्तकें हैं। इन पुस्तकों के आकार और विवरणों में बहुत अंतर है। इन विभिन्नताओं और अलग-अलग विचारों वाली पुस्तकों में यदि कोई बात साझी है तो यह हे कि यह सब एक ही व्यक्तित्व (ईसा मसीह) के आस पास घूमती हैं।

इस प्रकार पूरी बाईबल एक पुस्तक नहीं बल्कि 66 पुस्तकों का संग्रह है। इनको भिन्न-भिन्न लेखकों ने लिखा है। बाईबल (संपूर्ण रूप में) को लिखे जाने में 1600 साल लग गए। इस प्रकार यह धर्म पुस्तक (यहूदियों-इसाइयों) के बारे में मिथिहासिक और काल्पनिक कहानियों से आरंभ हो कर इतिहास पर आ कर टिकती है।

इसाई धर्म का संक्षिप्त इतिहास :

हज़रत ईसा की मौत और उनके पुनर्जीवित होने के कथित घटना (Resurrection) के शीघ्र पश्चात परमात्मा की आत्मा रसूलों में आ गई। इसाई इस घटना को हर साल पैंटोकास्ट के पर्व (Feast of pentocost) के तौर पर मनाते हैं। इस घटना के पश्चात रसूलों ने पूरी लगन से हज़रत ईसा और उनके संदेश का प्रचार लोगों में करना आरंभ कर दिया।

प्रसिद्ध रसूल **पीटर** के पहले उपदेश के समय ही तीन हजार व्यक्ति इसाई बन गए। धीरे-धीरे यूरोशलम में इसाई भाईचारा कायम हो गया। पर कट्टड़पंथी यहूदियों ने इस भाईचारे को समाप्त करने की पूरी कोशिश की। इसाई भाग कर गलील (Galilee) और सीरिया के उत्तरी राज्यों में आ गए जहां पर उन्होंने नए गिर्जाघर स्थापित किए।

सेंट पाल (पहला नाम साल) ने उत्तरी और दक्षिणी यूनान में चर्च कायम किया। उसके ईसाई धर्म के प्रचार संबंधी लिखे कुछ पत्र मूल इसाई साहित्य का अंग हैं।

पीटर यूरोशलम से रोम चला गया। सन 65 ई. तक इसाई मत सीरिया, एशिया माईनर, यूनान और रोम में फैल चुका था। रोम के बादशाह नीरो ने रोम के जल जाने के लिए इसाइयों को दोशी ठहराया था। बाद में होने वाले अत्याचार में पीटर और पाल को शहीद कर दिया गया।

सन 66 ई. में फिलस्तीन में यहूदियों ने रोम के विरुद्ध बगावत कर दी और **70 ई.** में रोमनों ने यूरोशलम तबाह कर दिया और मंदिर गिरा दिया। मुसीबत के समय इसाई भाईचारा और अधिक मज़बूत हुआ। बड़े-बड़े इसाई सामूहिक अस्तित्व में आए जिन का नाम चर्च पड़ गया। चर्च शब्द का निकास यूनानी शब्द कुरीआकोन (Kuriakon) से हुआ है जिस का भाव है-परमात्मा से संबंधित कोई वस्तु या स्थान।

आरंभ में ही इसाई धर्म बहुत तेजी से फला। रोमन सल्तनत के शहरों में बसने वाले यहूदियों ने भारी संख्या में इसको अपनाया। तब लोगों को राजा की पूजा करनी पड़ती थी, पर यहूदियों को इस से छूट थी क्योंकि उन का धर्म राजधर्म था। इसाइयों ने राजा की पूजा से इनकार किया। इस कारण बादशाह ने उन पर अत्याचार किए। पर यह धर्म

बढ़ता रहा। 250 ई. में रोम की सरकार ने इसाई धर्म को समाप्त करने के लिए जोरदार कदम उठाए। पर अंत में इसाइयों की विजय हुई और चौथी सदी के पहले अर्द्धकाल में, इसाई धर्म को रोमन साम्राज्य में **सरकारी धर्म के तौर पर मान्यता प्राप्त हो गई।**

सन 476 ई में रोमन साम्राज्य मिट जाने के बाद तो इसाई पादरियों और भिक्षुओं में से ही राज्य प्रबंध चलाने के लिए कौसिलर चुने गए।

5वीं सदी में इसाई धर्म फ्रांस में फैल गया। छटी सदी में स्पेन के गोथ लोगों ने चर्च को अपना लिया।

रोम के बिशप, जिस को पोप कहा जाता है, के प्रचारक - प्रयत्नों के फलस्रूप यह धर्म फैलता रहा। सन 1050 से 1500 ई तक इसाई चर्च पक्के पैरों पर खड़ा हो गया। इस समय यूरोप केवल एक धार्मिक संगठन के अधीन एक ही सामाजिक इकाई थी जिस का मुखी पोप था।

1054 ई. में चर्च बंट गई। पश्चिमी चर्च का नाम रोमन कैथोलिक और पूर्वी चर्च का नाम ग्रीक आरथेडैक्स चर्च पड़ गया।

जर्मनी के मार्टिन लूथर (1483 – 1546) ने इसाई पादरियों के स्वेच्छा से राज करने के अधिकार को और चर्च द्वारा बनाए गए संविधान को रद्द कर दिया। उस ने कहा कि धर्म ग्रंथों को ही विश्वास का एका - एक आधार माना जाए। 1555 में जर्मनी को लूथरन और कैथोलिक राज्यों में बांट दिया गया। लूथर के क्रांतिकारी विचार स्वीडन, डैनमार्क, नारवे आदि में फैल गए। इस से पूर्व 1529 ई. में एक समारोह में लूथर के विरुद्ध कार्रवाई करने के बारे में सरकारी हाकिमों ने फैसला किया था। पर कुछेक हाकिमों ने इस का विरोध यानी Protest किया था। इसलिए इस प्रोटैस्ट से प्रोटैस्टैंट शब्द का प्रयोग शुरू हो गया। फूट बढ़ने के कारण चर्च में जंग, युद्ध भी होते रहे। इन युद्धों (1550 - 1650ई.) को धर्म युद्धों का नाम दिया गया।

फ्रांस की क्रांति (1780 – 1815) के समय हिंसक कारवाईयों के द्वारा फ्रांस को इसाई धर्म के गलबे से छुटारा दिलाने के लिए प्रयत्न किए गए। पोप पाइस VI को पकड़ कर दक्षिणी फ्रांस में कैद कर दिया गया जहां पर उस की मृत्यु हो गई। पर जब क्रांति की बागडोर नेपोलीयन के हाथ आई तो उसने (1810 ई.) पोप के साथ समझैता कर लिया और इसाई धर्म को राज की नीतियां लागू करने के लिए प्रयोग किया। नैपोलियन के साम्राज्य के खातमे के पश्चात पोप रोम वापिस आया और उसका अधिकार पहले की तरह समाप्त हो गया।

1789 ई. से इसाई मिशनरियों के भिन्न - भिन्न देशों में जा कर बसने से इसाई धर्म सारे संसार में फैल गया। अमरीका, कैनेडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और लातीनी अमरीका में इन मिशनरियों के प्रयत्नों के फलस्वरूप ही चर्च की स्थापना हो सकी। मिशनरियों ने यह धर्म अफ्रीका और एशिया में भी पहुँचाया। क्रमबद्ध योजना के अधीन इस धर्म का प्रचार किया गया। धर्म प्रचारकों को प्रशिक्षण दे कर धर्म में जुटा दिया गया। इस सब के प्रभाव के कारण आज दुनियां का एक तिहाई भाग इस धर्म का श्रद्धालु है और इसाइयों की संख्या एक अरब के करीब है।

इसाई धर्म के सिद्धांतों की गुरमति से तुलना

(1) **ईश्वर :** ईश्वर के बारे में इसाई मत के विचार कुछ इस प्रकार हैं :

(क) ईश्वर एक ही है, निराकार है, सर्वव्यापी है, मनुष्य के अनुभव और सूझ से परे है। वह सभी अच्छाइयों का मालिक है। सब का पिता है, सब को प्यार करता है।

(ख) ईश्वर सृष्टि (अपनी रचना, प्राकृति, जीवों) से अलग रहता है। दूर आसमान में रहता है। सृष्टि रचना से पहले आदि में ईश्वर ही था और हमेशा के लिए रहेगा।

जो महान व उत्तम और अटल रहता है, और जिसका नाम पवित्र ईश्वर है, वह ऐसा कहता है। मैं उंचे व पवित्र स्थान पर निवास करता हूँ और उसके साथ भी रहता हूं जो दुखी और निर्धन हैं। - 57:15)

(ग) व्यक्तिगत परमात्मा (Personal God) ईश्वर का एक रूप, व्यक्तिगत ईश्वर होना भी है। इस ईश्वर में चेतनता, बुद्धि व स्वेच्छा के गुण हैं।

जहां तक गुरमति का संबंध है, उपरोक्त पैरा 1 (क) में दर्शाए इसाई विश्वासों के गुरमत काफी मेल खाती है, पर पैरा 1 (ख) में दिए गए विचारों के बारे में गुरमति का स्पष्ट फैसला है कि ईश्वर कहीं आसमानों पर नहीं रहता है और न ही वह सृष्टि से भिन्न है। बल्कि **ईश्वर तो सारी सृष्टि में ऐसा रमा हुआ है जैसे दूध में घी घुला होता है।** सभी मनुष्यों, जीवों जंतुओं में प्रभु की ज्योति (शक्ति) समाई हुई है जिस के आश्रय वह चलते-फिरते, सोचते व काम करते हैं। गुरबाणी का निर्णय है :

-सगल बनसपति महि बैसंतरु, सगल दूध महि घीआ ।।

ऊच नीच महि जोति समाणी, घट घटि माधउ जीआ ।। (सोरठि महला 5, पृष्ठ 617)

-सभि महि जोति, जोति है सोइ ।।

यथा

तिसकै चानणि, सभ महि चानणु होइ ।। (धनासरी महला 1, पृष्ठ 633)

यथा

-बलिहारी कुदरति वसिआ ।। तेरा अंतु न जाई लखिआ ।। 1 ।। रहाउ ।।

जाति महि जोति, जाति महि जाता, अकल कला भरपूरि रहिआ ।।

(वार आसा महला 1, पृष्ठ461)

ईश्वर के अटल अस्तित्व ईसाई विचार, गुरमति से मेल खाता है।

गुरमत किसी भिन्न व्यक्तिगत ईश्वर में विश्वास नहीं करती। गुरमत तो केवल एक ही ईश्वर में विश्वास करती है जो सर्वगुण संपन्न और सर्वशाक्तिमान है।

(2) पाप का प्रवेश (Sin Enter)

बाईबल की पुस्तक उत्पति सिद्धांत (The book of Genesis of the Bible) में इस बात का वर्णन है कि मनुष्य बाबा आदम तथा हव्वा (Adam and Eve) की संतान है, जिन्होंने प्रभु के आदेश की अवहेलना की और पाप के भागीदार बने। उनकी संतान भी पापी है।

लिखा है कि आदम और हव्वा को बनाने और उनको स्वर्ग में छोड़ने के पश्चात परमात्मा ने उनको दी गई स्वतंत्रता की परीक्षा ली। आदम और हव्वा इस परीक्षा में फेल हो गए क्योंकि शैतान के उकसाने पर हवा ने आदम को उकसाया जिसने प्रभु के आदेशों की अवहेलना करके विवर्जित फल (गेहूँ का दाना) खा लिया। इस प्रकार आदम व हवा पाप के भागीदार बन गए जिसके कारण आरंभ से मनुष्य जाति भ्रष्ट हो गई। इस प्रकार संसार में पाप का प्रवेश हो गया।

''एक मनुष्य, आदम के पाप ने संसार में प्रवेश किया। पाप के कारण मौत आई और इसलिए सब ने पाप किया है मौत सब मनुष्यों में फैल गई। (रोमिओं - 5:12)

''कोई भी धर्मात्मा नहीं, एक भी नहीं। (रोमिओं - 1:10)

''क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से वंचित हैं'' (रोमिओं - 3:23)

परमात्मा ने मनुष्य के लिए जो शानदार योजना बनाई थी, वह पाप करने और मनुष्य के अपने असली लक्ष्य को भूल जाने के कारण तबाह हो गई। इस प्रकार मनुष्य उस स्थाई आनंद से वंचित हो गया जो परमात्मा ने उसको देना था।

गुरमति आदम और हव्वा के अस्तित्व को ही नहीं मानती। इसलिए उनके द्वारा किये गए पाप के साथ सारी सृष्टि के भ्रष्ट हो जाने के विचार को भी नहीं मानती। गुरमति यह भी नहीं मानती कि किसी एक के किये पाप का फल दूसरों को भुगतना पड़ेगा। गुरमति का अटल विश्वास है, सब को अपने किये कामों का फल अवश्य मिलेगा।

अहिकर करे सु अहिकरु पाए, इक घड़ी मुहतु न लागै ॥ (वार मारू, महला 5, पृष्ठ 1011)

(3) ईसा का संसार में आना :

सृष्टि रचना के पश्चात सदियां बीत गई। परमात्मा अपने लोगों (यहूदियों) से प्यार करता रहा। जब निश्चित समय आया तो परमात्मा का जिंदा कलाम शब्द जिंदा पुरुष बन गया - ईसा का जन्म हुआ। इसको अवतारवाद की लीला कहते हैं। इस तरह परमात्मा का वह वचन पूरा हो गया जो उसने यहूदियों के पूर्वजों, इब्राहीम व उसकी संतान को दिया था कि वह ईसा को भेजेगा, जो मनुष्यों को उस (परमात्मा) तक पहुंचने के योग्य बनावेगा, उन के पाप अपने सिर मढ़ लेगा उनकी मुक्ति के लिए अपनी कुर्बानी देगा। ईसा परमात्मा का पुत्र कहलवाया।

परमात्मा स्वयं ईस मसीह के रूप में मानवता को आ कर मिला – कुंवारी कन्या से पैदा हुआ। उसने मनुष्य जाति के लिए कष्ट सहारे। मौत के पश्चात तीसरे दिन पुनर्जीवित हो कर उसने मनुष्यों को ऐसी शक्ति प्रदान की जिस के द्वारा वे स्थाई आनंद की प्राप्ति करें। अब ईसा परमात्मा के दाई और बैठा हकूमत कर रहा है। वह एक दिन फिर संसार में आएगा और चुने हुए व्यक्तियों को संसार में से ले जाएगा।?

ईसा जी के बारे में उपरोक्त इसाई विश्वासों के बारे में, बाईबल में से, नीचे लिखे संदर्भ दिये जाते हैं:

– ''परमेश्वर ने संसार के साथ ऐसा प्यार रखा कि उस ने अपना इकलौता पुत्र (संसार को) दे दिया ताकि जो भी उस पर विश्वास रखे, वह नाश न हो, बल्कि अनंत जीवन प्राप्त करे। (यूहना 3:16)

– परमेश्वर को किसी ने भी नहीं देखा। इकलौता पुत्र, जो पिता की गोद में है, उसने ही उसको (परमेश्वर को) प्रकट किया। (यूहना – 1:18)

– मैं फिर आ कर आपको अपने पास ले जाउंगा। (यूहना 14:3)

– जिस तरह आपने उस को स्वर्ग की ओर जाते देखा है, वह वैसे ही फिर आवेगा।

(प्रेरितों के काम – 1:11)

ईसा मसीह की संपूर्ण लीला पर विश्वास करना इसाइयों का मुख्य कर्तव्य है। बाईबल में अंकित किया गया है कि जो लोग ईसा पर विश्वास नहीं लाएंगे, वे परमात्मा के क्रोध के भागीदार होंगे।

– जो पुत्र को नहीं मानता, वह दोषी ठहराया जा चुका है, क्योंकि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। (यूहना 3:18 – 19)

गुरमति इसाई मत के इन विचारों से भिन्नता रखती है कि परमात्मा, ईसा जी के रूप में प्रकट हुआ। गुरमति तो प्रभु को अजूनी, अजन्मा मानती है, जो न तो पैदा हौता है और न ही मरता है।

– तूं पारब्रहमु परमेसरु, जानि न आवही ।। (वार मारू महला 5, पृष्ठ 1015)

यथा

– जनमि न मरै, न आवै न जाइ ।।

नानक का प्रभु, रहिओ समाइ ।। (भैरउ महला 5, पृष्ठ 1136)

गुरमत – दर्शन के अनुसार जो जन्म लेता है, वह ईश्वर नहीं हो सकता। इसलिए ईसा, ईश्वर नहीं था जैसा कि इसाइयों का विश्वास है।

गुरमत इसाई मत के इस विश्वास के साथ सख्त मतभेद रखती है कि जो ईसा को नहीं मानता उसको प्रभु दोषी ठहराएगा और उस मनुष्य पर क्रोध करेगा। गुरु साहिबान चाहे प्रभु के साथ एकमेव हुई प्रभु जैसे महान व्यक्तित्व थे पर उन्होंने भी लोगों को अपने निजी व्यक्तित्व (या शरीर) के संग नहीं जोड़ा बल्कि प्रभु के संग एकसुरता में से उनको जिस शब्द अथवा कलाम की प्राप्ति हुई थी उस शबद (प्रभु के नाम का आदेश अथवा ईश्वरीय ज्ञान) को ही उन्होंने शबद गुरू के रूप में प्रचारित किया। गुरू साहिब का यह पक्का विश्वास था कि गुरमत

के संग जुड़ कर ही मनुष्य जीवन सफल कर सकता है। तो भी आप ने उदारचित्त हो कर यह कहा था 'प्रभु तूं माया की अग्नि में जल रहे मनुष्यों की रक्षा कर, जिस ढंग से भी इन का बचाव हो सकता है, उसी से ही इनको बचा।' अर्थात :

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ।।

जितु दुआरै उबरै, तितै लेहु उबारि ।। (वार बिलावल, महला 3, पृष्ठ 853)

गुरु साहिब ने सिखों को गुरमति गाडी राह पर चलने का उपदेश दिया है और यह गारंटी दी है कि जो मनुष्य तन-मन से गुरमत मार्ग पर चलेंगे वे इस सांसारिक जीवन को सफलता से गुजारने के पश्चात सर्वव्यापी प्रभु की आत्मा में विलीन हो जाएंगे। उन्होंने यह नहीं कहा कि वे किसी खास समय पर संसार पर फिर आ कर लोगों के स्वर्ग में ले जाएंगे। उन्होंने मनुष्य का लक्ष्य किसी फर्जी स्वर्ग की प्राप्ति नहीं बताया, बल्कि प्रभु में विलीन होना बताया है। इस लक्ष्य की प्राप्ति का एकाएक ढंग शबद गुरू के संग जुड़ कर, प्रभु के संग प्रेम डालना, उसको अपनी याद में बसाना, -सुमिरन करना, स्तुति गायन करना अथवा नाम का जाप करना बताया है।

गुरमति ईसा के कुंवारी कन्या से पैदा होने के गैर-प्राकृतिक ढंग को भी नहीं मानती है। गुरमति का विश्वास है -

जैसे मात पिता बिनु बालु न होई ।। (गोंड कबीर जी पृष्ठ 872)

(4) **त्रिमूर्ति या त्रै-पक्ष (Trinity)** इसाई मत का परमात्मा एक व्यक्ति नहीं बल्कि तीन भिन्न-भिन्न व्यक्ति हैं। इस प्रकार इसाई विश्वासों के अनुसार ईश्वर के तीन पक्ष है। (1) परमात्मा स्वयं (2) परमात्मा की पवित्र आत्मा या रूह और (3) परमात्मा का पुत्र ईसा मसीह। इन दोनों को ही दैव पुरुष कहा गया हैं। एक परमात्मा में तीन दैवी पुरुषों का सिद्धांत, मनुष्य की समझ से बाहर की चीज है। वैसे यह बात स्वाभाविक ही है 'त्रिपक्षीय ईश्वर' इसाई दर्शन का एक मूल सिद्धांत है।

गुरमति त्रिपक्षीय ईश्वर में विश्वास नहीं करती। गुरमत ने ईश्वर के एक व केवल एक होने का विश्वास दृढ़ करवाया। एकीश्वर ही सर्वगुणसंपन्न है। अपनी इच्छा व आदेश के अनुसार सभी काम कर रहा है। उसको किसी और सहायता की जरूरत नहीं।

(5) **दैवी सत्य (Supernatural Revelation)** इसका भाव, सच्चाई का वह प्रकाश है जो मनुष्य के दिमाग की पहुंच से परे है। पहले यह मबियों (Prophet) के द्वारा प्रकट हुआ पर अंततः परमात्मा ने इस प्रकाश को अपने पुत्र ईसा मसीह के द्वारा प्रकट किया है। वह (ईसा) परमात्मा का जिंदा (देहधारी) कलाम (वचन-शबद) है।

गुरमत इस बात से तो सहमत है कि प्रभु मानव मन की पकड़ में नहीं आ सकता। वह अगम्य अपार है और अपने भक्तों पर कृपा करके उनको सच्चाई का ज्ञान प्रदान करता है, जैसे बाबा फरीद जी भगत कबीर जी और गुरू प्रमाणित अन्य भक्तों को उसने सत्य का ज्ञान प्रदान किया था पर गुरमत इस बात से सहमत नहीं कि ईश्वर ने अंत में ईसा के द्वारा सत्य को प्रकट किया और ईसा के पश्चात इस दैवी सत्य को प्रकट करना बंद कर दिया।

(6) **विश्वास व रहमत (Faith and grace)** विश्वास से, इसाइयों का तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपना सारा अपनत्व, बुद्धि और इच्छा परमात्मा के सम्मुख अर्पण कर दे। ऐसा मनुष्य पर प्रभु अपने आप को प्रकट करता है। पर इसी प्रकटाव से पूर्व मनुष्य पर प्रभु की कृपा होनी चाहिए। विश्वास करने के लिए मनुष्य स्वतंत्र है, उसको मजबूर नहीं किया जा सकता।

गुरमत प्रभु के सम्मुख अपने आपको अर्पित करने और उसकी कृपा का पात्र बनने के इसाई विश्वास से सहमत है। पर प्रभु की कृपा का पात्र बनने के लिए भी कुछ प्रयास की जरूरत है। वह है गुरू की शिक्षा को समझना और उस पर अमल करना।

(7) **शैतान** : शैतान इसाई मत के कल्पित, एक दुष्ट व्यक्ति है। यह मनुष्यों को बुराई और पाप करने की ओर प्रेरित करता है। बाईबल में इसका कई नाम दिये गए हैं। जैसे शैतान, बड़ा सांप, पुराना अजगर जगत का सरदार, यह संसार का ईश्वर, गिरा हुआ पतित दूत, धोखेबाज, झूठा, नाश करने वाला, मृत्यु का सरदार और शत्रु आदि।

कहा गया है कि शैतान सर्वशक्तिशाली और बहुत ही चालाक है। वह धर्मात्मा लोगों को गलत राह पर डालने व बहकाने का प्रयत्न करता है। बाईबल में अंकित है :

सावधान होवो और जागते रहो, क्योंकि आपका विरोधी शैतान गर्जने वाले शेर की भांति इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाए।'' (पतरस 5:8)

शैतान ने ही बाबा आदम को वर्जित फल खाने के लिए बहकाया था। शैतान ने ईसा मसीह को भी परीक्षा में से गिराने का प्रयत्न किया था पर प्रभु (ईसा) ने उस पर विजय प्राप्त कर ली। (प्रभु) ईसा ने पापियों के लिए फांसी के तख्त (सलीब) पर अपने प्राण त्याग दिये और शैतान को पराजित कर दिया।

शैतान ही इस संसार में होने वाले सारे पापों व बीमारियों की जड़ है और मनुष्यों को फंसाने के लिए जाल फैलाता है। इसलिए परमेश्वर के अधीन हो जाओ और शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे समीप से भाग जाएगा।

(याकूब 4:7)

(प्रभु) ईसा मसीह की मृत्यु द्वारा शैतान का सर्वनाश हो जाएगा। इस की खातिर अनंत अग्नि तैयार की गई है। जब प्रभु यीशु आएगा तो वह (शैतान) एक हजार सालों के लिए आग में फेंक दिया जाएगा।

(प्रकाशित वाक भविष्य वाणी 20:1-3)

शैतान के बारे में इस तरह के विचार दर्शा कर इसाई कहते हैं, ''आओ, हम सारा जीवन प्रभु यीशू, अपने विजई अग्रणी को समर्पित कर दें। हम सब हथियारों से लैस हो कर बहादुर योद्धाओं की भांति प्राण देने तक लड़ते रहें। (पुस्तक विश्वास चट्टान (हिंदी) अध्याय 17, पृष्ठ 66-68)

गुरमति में शैतान के अस्तित्व को बिल्कुल ही स्वीकार नहीं गया। इसाई शैतान को सर्वशक्तिमान मानते हैं, पर गुरमत में केवल वाहिगुरू परमपिता परमात्मा को ही सर्वशक्तिमान माना गया है। वाहिगुरु के मुकाबले की और उसका विरोध कर पाने वाली कोई भी हस्ती सारे ब्रहमांड में नहीं है। गुरमति माया के संकल्प को मानती है,

जिस के अनुसार माया एक शक्ति है जो प्रभु द्वारा ही पैदा की गई है। यह शक्ति मनुष्य को अधर्म वाले पाप की ओर मोड़ती है। पर गुरसिख शब्द गुरु की कृपा द्वारा माया की वास्तविकता को समझ जाते हैं और माया के हल्लों को पछाड़ देते हैं। प्रभु के मुकाबले में माया की कोई रत्ती भर भी शक्ति नहीं है क्योंकि यह उसी के द्वारा सृजित की गई है।

(8) **सृष्टि रचना :** सारे कतेबी मत सृष्टि रचना के बारे में लगभग एक समान विचार रखते हैं। उनके अनुसार जब प्रभु की सृष्टि रचना करने की इच्छा हुई तो सृष्टि रचना हो गई। बाईबल में आए कुछ विचार नीचे दर्शाए जाते हैं:

(क) आरंभ में प्रभु ने आकाश व पृथ्वी की रचना की। पृथ्वी बेडोल व सूनी थी। इस पर घोर अंधकार था। परमेश्वर की आत्मा पानी पर डोल रही थी। (परव 2, अ 1)

(ख) प्रभु ने कहा, जल से जल को अलग करने के लिए बीच में आसमान होना चाहिए। अत: उसने आकाश बनाया और निचले तथा ऊपर के पानी को अलग-अलग किया। जब ऐसा हो गया तो ईश्वर ने आकाश को स्वर्ग कहा। (परव 1, अयन 7)

(ग) प्रारंभ में ईश्वर की आत्मा पानी पर डोलती थी। उसने कहा कि प्रकाश, उसी समय प्रकाश हो गया फिर ईश्वर ने प्रकाश को अंधकार से अलग करके दिन और रात का नाम दिया। दूसरे दिन खुदा ने आकाश बनाया और तीसरे दिन सारी वनस्पति की सृजना की। चौथे दिन चांद, सूर्य और तारों की रचना की। पांचवें दिन जल, जीव और पक्षियों की सृजना की। छटे दिन कीड़े, मकौड़े, पशु, स्त्री व पुरुष बनाए। सातवें दिन सारा काम खत्म करके आराम किया। (बाईबल अध्याय पहला और दूसरा)

गुरमति इस बात को मानती है कि सृष्टि की रचना प्रभु के अपने आदेश द्वारा ही हुई है।

– हुकमी होवनि आकार, हुकमु न कहिआ जाई ।।

हुकमी होवनि जीअ, हुकमि मिलै वडिआई ।। (जपुजी, महला 1)

यथा

जा तिसु भावै ता स्रिसट उपाए ।।

आपनै भाणै लए समाए ।। (सुखमनी महला 5, पृष्ठ 282)

– आपे ही करणा कीओ, कल आपे ही तै धारीऐ ।। (वार आसा, महला 1 पृष्ठ 473)

– कीता पसाउ, ऐको कवाउ ।।

तिसते होए लरव दरीआउ ।। (जपुजी, महला 1 पृष्ठ 3)

जिस रीति से इस आदेश का कार्यपालन हुआ इस का थोड़ा सा संकेत भी मिलता है। लिखा है कि अकाल पुरख से गैसों (पवण) की उत्पत्ति हुई, गैसों से पानी बना और पानी में प्रभु ने जीव पैदा किये और सृष्टि की रचना हुई :

साचे ते पवना भइआ, पवने ते जलु होइ ।।

जल ते त्रिभवणु साजिआ, घटि घटि जोति समोइ ।। (सिरी राग महला 1, पृष्ठ 19)

गुरमति ने सृष्टि रचना का बहुत विवरण नहीं दिया और कहा है कि जिस समय सृष्टि की रचना की गई, उस समय का किसी को भी ज्ञान नहीं, केवल रचनाकार प्रभु ही इस बात को जानता है :

थिति वारु न जोगी जाणै, रुति माहु ना कोई ।।

जा करता सिरठी कउ साजे, आपे जाणै सोई ।। (जपु जी, महला 1 पृष्ठ 4)

इस प्रकार गुरमत इसाई मत के इस विचार से सहमत नहीं कि प्रभु ने सप्ताह के छ: दिन में भिन्न-भिन्न चीजों की रचना की और सातवें दिन आराम किया। प्रभु ने सृष्टि रचना ऐसे नहीं की रचना की और सातवें दिन आराम किया। प्रभु ने सृष्टि रचना ऐसे नहीं की जैसे कोई मिस्त्री किसी मशीन आदि को अपने हाथों से बनाए, कोई कुम्हार बर्तन बनाये या कोई राज, मकान का निर्माण करे। प्रभु के काम प्रभु के आदेशों के नुसार स्वत: हो रहे हैं, उसको किसी प्रकार के विशेष परिश्रम व बल की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार उसके थकने या आराम करने का प्रश्न ही नहीं उठता।

(9) **पवित्र आत्मा (Holy Spirit)** पवित्र आत्मा त्रिपक्षीय ईश्वर का पक्ष है - इसको पवित्र रूह कहते हैं। इसका निकास पिता (God) और पुत्र (Jesus Christ) से होता है। यह हज़रत ईसा द्वारा स्थापित चर्च की आत्मा है।

उपरोक्त इसाई विश्वास के अनुसार परमात्मा की पवित्र रूह (आत्मा) उस आत्मा से भिन्न है जो मनुष्यों व जीव-जंतुओं में निवास करती है और उनमें हरकत का कारण बनती है। **गुरमत** के ईश्वर के ऐसे भिन्न पवित्र रूप के अस्तित्व को नहीं माना है। इसलिए पवित्र रूह के किसी एक व्यक्ति (ईसा मसीह) से निकास का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

(10) **मुक्ति :** इसाई मत के अनुसार मुक्ति का अर्थ है-मौत के पश्चात पिता परमात्मा के पास (स्वर्ग में) वापिस जाना। यह (मुक्ति) ईसा के द्वारा प्राप्त होती है। प्रभु के पुत्र ईसा की आत्मा की सभी इसाइयों की आत्मा है, इसलिए सभी इसाई प्रभु के पुत्र हैं। ईसा की आत्मा उन को प्रभु के संग मिलाती है। ईसा ही मुक्ति दाता है:

'परमेश्वर ने मसीह (ईसा के द्वारा प्रकट हो कर, संसार का अपने संग मिलाप कर लिया।

(कुरिंथिओं 5:19)

'यूसू मसीह नासरी के नाम से ही......... और किसी दूसरे द्वारा नहीं क्योंकि स्वर्ग से नीचे मनुष्यों में कोई और नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हमारा उद्धार हो सके।'' (परेरिता के काम 4:10 व 12)

''प्रभु यीशु ने कहा : रास्ता और सच्चाई व जीवन मैं ही हूं। मेरे बिना कोई भी पिता के पास नहीं पहुंच सकता। (यूहना 146)

''परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर व मनुष्यों के बीच एक ही बिचौलिया है, अर्थात यीशु मसीह जो मनुष्य है। जिस ने अपने आपको सभी को छुटकारे की कीमत में दे दिया। (तीमूथिऊस - 2:56)

सिख धर्म में मुक्ति का संकल्प इसाई मत के विश्वास से भिन्न है। सिख धर्म में मुक्ति का भाव माया और विकारों के प्रभाव से मुक्त हो कर, प्रभु के रंग में रम कर, इस जीवन को व्यतीत करना और जीवन के अंत के पश्चात सर्वव्यापक प्रभु (की आत्मा) में लीन हो जाना है। इसाई विश्वास के अनुसार, मुक्त आत्मा प्रभु के पास, स्वर्ग में निवास करती है, प्रभु की आत्मा में विलीन नहीं होती है। प्रभु को एक बादशाह के रूप में कल्पित किया गया है जो दूर आसमानों में आसन जमा कर संसार की प्रक्रिया को चला रहा है। सिख धर्म में प्रभु के शरीर के निवास को कोई स्थान नहीं दिया गया है। प्रभु तो शरीर-रहित है और एक सर्वोच्च शक्ति के रूप में ब्रहमांड के कण-कण में मौजूद है। मनुष्यों व अन्य जीव जंतुओं की आत्मा प्रभु की सर्वव्यापक आत्मा का अंश ही है, जैसे पानी के बूदें समुंद्र का अंश होती हैं। जो मनुष्य गुरु की शिक्षा पर चल कर जीवन बसर करते हैं, सांसारिक कर्तव्य निभाने के साथ-साथ प्रभु की स्तुति गायन के आश्रय, उस से सुरति जोड़े रखते हैं, वे मौत के पश्चात प्रभु में लीन हो जाते हैं, वेसे ही जैसे समुंद्र में पानी की बूंद जज़्ब हो जाती है - समा जाती है। जो मनुष्य शब्द गुरु की शिक्षा के विपरीत चलते हैं, माया और विकारों में फंसे रहते हैं, दुराचारी और पापी होते हैं, वे जन्म- मृत्यु के भंवर में पड़ जाते हैं और पापों व बुरे कामों का फल भोगते हैं।

ईसा की भांति गुरु साहिबान ने यह कभी भी नहीं कहा कि उन का व्यक्तित्व ही मुक्तिदाता है और उनके व्यक्तित्व पर विश्वास करने से ही मुक्ति प्राप्त हो जाएगी या केवल वह ही मुक्ति दिला सकते हैं और सिखों को कल्पित स्वर्गो में पहुंचाएंगे । बल्कि उन्होंने तो यह भी कहा है कि माया के बंधनों से मुक्ति और प्रभु में विलीनता, शबद गुरु को सुरति में बसाने और शबद गुरु का अनुसरणकर्ता हो कर जीवन बसर करने से ही हो सकती है।

(11) **आत्मा :** इसाई विश्वास के अनुसार प्रत्येक मनुष्य का एक भौतिक शरीर है और दूसरी आत्मा है। प्रभु द्वारा सृजित होने के कारण इसका आरंभ तो है, पर अंत नहीं। यह अमर है। आत्मा को मानवीय आत्मा के तौर पर सृजित किया गया था। यह शरीर का अंग था और शरीर इसके सहारे चलता था। इसलिए आत्मा केवल एक शरीर को जिंदा रख सकती है। इस जीवन में इसका अस्तित्व केवल एक बार ही होता है प्रत्येक आदमी केवल एक ही बार मरता है। इसाइयों का विश्वास है कि पुनरुत्थान (Resurrection) वाला दिन जरूर आवेगा जब यह आत्मा फिर पहले शरीर में मिल जाएगी जो चाहे मिट्टी में क्यों न मिल गया हो। मनुष्य की आत्मा को एक बिल्कुल भिन्न प्रकार की आत्मा माना जाता है। यह पौधों या पशुओं के शरीरों में परवेश नहीं कर सकती है।

सिक्रव धर्म आत्मा को अमर और अविनाशी मानता है। क्योंकि वह प्रभु की अपनी आत्मा की वंश है। सिक्रव धर्म प्रभु की अपनी भिन्न आत्मा पवित्र रूप- और मानवों, पशुओं और पौधों आदि में भिन्न-भिन्न प्रकार की आत्माओं में विश्वास नहीं करता। सिक्रव धर्म के अनुसार सारे ब्रहमांड में मनुष्यों, जीव जंतुओं व वनस्पति में एक ही प्रभु की आत्मा मौजूद है जिस को ज्योति का नाम दिया गया है:

सभ महि जोति, जोति है सोइ ॥ (धनासरी महला 1 पृष्ठ 663)

गुरमति यह भी नहीं मानती कि एक आत्मा केवल एक ही शरीर के लिए होती है। गुरमति विश्वास के अनुसार मनुष्य जीव की मृत्यु के पश्चात, आत्मा या तो प्रभु में लीन हो जाती है या फिर दूसरा शरीर धारण कर लेती है। गुरमति इस विचार के लिए बिल्कुल ही सहमत नहीं कि किसी पुनरुत्थान वाले दिन सभी शरीरों की अपनी - अपनी आत्मा उन में मिल जाएगी।

इसाई मत, मनुष्य की मृत्यु के पश्चात उसके अस्तित्व के बारे में परस्पर विरोधी विचार रखती है। एक ओर तो यह मत मानता है कि अपने किये कर्मो के अनुसार मृत्यु के पश्चात मनुष्य या तो स्वर्ग में जाएंगे या नर्क में। दूसरा यह कि किसी कल्पित पुनरुत्थान वाले दिन सभी आत्मांए इस मातृलोक (धरती) पर अपने शरीर में प्रेवश कर लेंगी और उन मनुष्यों को ईसा मसीह स्वयं आ कर स्वर्ग में ले जाएंगे। इसाई मत आवागवन (पुनर्जन्म) के सिद्धांत को नहीं मानता जब कि गुरमत आवागवन के सिद्धांत के दृढ़ता से स्वीकार करती है और इसे प्रचारित करती है।

(12) **स्वर्ग - नर्क :** इसाई मत के अनुसार जब एक आदमी मरता है तो यदि परमात्मा की उस पर कृपा हो जाय तो वह स्वर्ग में जाता है, यदि पापों का पलड़ा भारी हो तो नर्को में।

सिख गुरू साहिबान के समय में हिंदू और मुसलमान दोनों ही स्वर्ग नर्क में विश्वास रखते थे। इसलिए सतगुरू जी ने मनुष्यों को समझाने के लिए स्वर्ग या नर्क शब्दों का अपनी बाणी में कहीं - कहीं प्रयोग तो जरूर किया है पर इन के अस्तित्व को सिद्धांत रूप में स्वीकार नहीं किया। आपने स्पष्ट लिखा है कि गुरमुख स्वर्ग - नर्क रूप में स्वीकार नहीं किया। आपने स्पष्ट लिखा है कि गुरमुख स्वर्ग - नर्क के विचार को रद्द कर देते हैं।

- कवनु नरकु किआ सुरगु बिचारा, संतन दोऊ रादे ॥ (रामकली कबीर जी पृष्ठ 969)

यथा

- कबीर सुगर नरक ते मै रहिओ, सतिगुरू कै परसादि ॥

चरन कमल की मउज महि, रहउ अंति अरु आदि ॥ (सलोक कबीर जी पृष्ठ 1370)

(13) प्रलय विज्ञान अथवा परलोक शास्त्र (Eschatology)

इसका अर्थ है मनुष्य का अंतिम मनोरथ। संसार में आ कर मनुष्य का अंतिम मनोरथ है परमात्मा को पूरे मन से समझना, उसको प्यार करना ओर उसकी सेवा करना। हज़रत ईसा की शिक्षा और उनके पदचिन्हों पर चल कर, परमात्मा की इच्छा का पालन करना। हज़रत ईसा ही परमात्मा और मनुष्यों के बीच, बिचोलिये हैं। जो लोग ऐसा करेंगे उनको स्वर्ग में स्थान मिलेगा। वह परम आनंद की अवस्था में परमात्मा के पास रहेंगे।

गुरमति इस बात से सहमत है कि मनुष्य का जीवन मनोरथ प्रभु को समझना, उस के संग प्यार डालना, उसकी सेवा करना और उस के संग एकसुरता कायम करना है पर गुरमत यह नहीं मानती कि हज़रत ईसा या और कोई मनुष्य, ईश्वर की राह में बिचौलिया हो सकता है। गुरमत के अनुसार तो शबद गुरु के संग जुड़ कर, गुरू साहिबान के डाले हुए पदचिन्हों पर चल कर, जिज्ञासु माया और विकारों की मैल उतार लेता है और ईववरीय गुणों

को धारण करके अंतत: प्रभु में लीन हो जाता है। गुरमति में स्वर्गो का लालच नहीं दिया गया बल्कि प्रभु के चरण में रहना, प्रभु के आदेश को समझ कर उसकी आज्ञा का पालन करना व सहज – आनंद की अवस्था में विचरण करना। प्रभु के आदेश की समझ गुरू से होती है।

(14) सामाजिक नियम

(क) प्यार की शिक्षा – इसाई धर्म मनुष्यों में प्यार की शिक्षा देता है, परमात्मा को प्यार करो, अपने पड़ोसी को प्यार करो..... दुश्मन को प्यार करो, उनके संग सदव्यवहार करो जो आपको नफरत करते हैं। (Mt 543-44) झगड़ों की जगह क्षमा धारण करो।

(ख) पदार्थवादी वस्तुओं का बंटवारा : पदार्थवादी वस्तुओं का बंटवारा होना चाहिए ताकि कोई जरूरतमंद न रहे (एक्टस 4/32-33)। यदि आप संपूर्ण होना चाहते हैं तो जाओ जो कुछ आपके पास है बेचो और गरीबों के बांट दो और आपको स्वर्ग में खज़ाना प्राप्त हो जाएगा।

(ग) धन : अमीरों को दुख उठाने होगे। (लूकां 6:14) क्योंकि एक ऊंठ के लिए सूई की नोक में से निकल पाना एक अमीर आदमी के स्वर्ग में प्रवेश करने से आसान है। (Mt 19 : 524)

(घ) पारिवारिक जीवन : परिवार समाज की धुरी है। पारिवारिक जीव को परिवार रखने के लिए, इसाई मत में व्यभिचार (Adultery) व अन्य शारीरिक व्यभिचारों (Sexual Crimes) की निंदा की गई है। तलाक विवर्जित है। बाईबल में लिखा है, जिन को परमात्मा ने इकट्ठा किया है, मनुष्य को (उनको) अलग नहीं करना चाहिए।'

(ङ) परिश्रम : को अपनी आजीविका का अर्जन स्वयं करना चाहिए। इस बारे में लिखा है, ''यदि कोई आदमी कोई काम नहीं करता, तो उस को खाने को भी न दो। (The 3:10)

गुरमत उपरोक्त सामाजिक नियमों के बारे में आम तौर पर इसाई धर्म से मेल खाती है। मानवीय भाईचारे में प्यार की भावना के बारे में गुरू जी का आदेश है :

ना का बैरी नहीं बिगाना, सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ (कानड़ा महला 5 पृष्ठ 1296)

यथा

सभु को मीतु हम आपन कीना, हम सभना के साजन ॥ (धनासरी महला 5, 671)

गुरमति ने सिखों को परिश्रम द्वारा जीविकोपार्जन करने और उस में से दूसरों के कल्याण के लिए उस धन का उपयोग करने का उपदेश दिया है :

घालि खाइ किछु हथहु देहि ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ ॥

(सारंग की वार महला 1 पृष्ठ 26)

दूसरों का हक मारने वालों को सख्त प्रताड़ित किया गया है।

हकु पराइआ नानका, उसु सूअर उसु गाइ ।।

गुरु पीरु हामा ता भरे, जा मुरदारु न खाइ ।। (सलोक महला 1, वार माझ पृष्ठ 141)

जरूरतमंदों की सेवा के काम को सिख ने अपना धार्मिक कर्तव्य समझ कर करना होता है। इसके बदले में वह किसी चीज़ की आशा नहीं करता। सेवा करने के बदले उसको इसाई मत की तरह किसी स्वर्ग का लालच नहीं दिया गया। धन संपत्ति के समान वितरण का उपदेश दिया गया है।

जिसु ग्रिहि बहुतु, तिसै ग्रिहि चिंता ।।

जिसु ग्रिहु थोरी, सु फिरै भ्रमंता ।।

दुहू बिवसथा तो जो मुकता, सोई सुहेला भालीऐ ।। (मारू महला 5, पृष्ठ 1019)

धन-दौलत के बारे में स्पष्ट कहा गया है कि माया गलत ढंग (धोखा, फरेब, हेराफेरी) व पाप द्वारा ही जोड़ी जा सकती है और मनुष्य के साथ यह चीजें नहीं जाती हैं।

पापा बाझहु होवै नाही, मुइआ साथि न जाई ।। (आसा महला 1 पृष्ठ 417)

इसलिए मायाधारी मनुष्य के बारे में कहा गया है :

माइआधारी अति अंना बोला ।। (वार गउड़ी महला 3 पृष्ठ 313)

पर यह भी माना गया है कि यदि धनवान मनुष्य गुरु द्वारा दर्शाए मार्ग पर चले तो वहा माया के प्रभाव से बच कर प्रभु भक्त बन सकते हैं। चाहे ऐसे लोगों की संख्या संसार में बहुत कम होती है पर ये लोग होते जरूर हैं। भाई गुरदास जी ने राजा जनक को ऐसे पुरुषों में गिना है।

पारिवारिक जीवन की पवित्रता के बारे में गुरबाणी में स्पष्ट आदेश हैं। व्यभिचार (परस्त्री या परपुरुष के संग शारीरिक संबंध) से सिखों को सख्ती से रोका गया है। अपने पति अथवा अपनी पत्नी के साथ ही शारीरिक संबंधों की अनुमति है। गुरू का आदेश है :

-घर की नारि तिआगै अंधा ।। पर नारी सिउ घालै धंधा ।।

जैसे सिंबलु देखि सुआ बिगसाना ।। अंत की बार मूआ लपटाना ।।

पापी का घर अगने माहि ।। जलत रहै मिटवै कब नाहि ।। (भैरउ, नामदेव जी पृष्ठ 1164)

-जैसा संगु बिसीअर सिउ है रे, तैसो ही इहु परग्रिहु ।। (आसा महला 5, पृष्ठ 403)

-देखि पराईआं चंगीअइा, मावां भैणां धीआं जाणे ।। (भाई गुरदास जी, वार 29)

-हउ तिस घोल घुमाइआ, पर नारी दै नेड़ न जावै ।। (भाई गुरदास जी, वार 12)

परिणाम स्वरूप हम कह सकते हैं कि ईश्वर के संकल्प के बारे में कुछ विचारों और सामाजिक नियमों (व्यवहार) के बारे में गुरमत और इसाई मत में समानता जरूर है पर मुख्य धार्मिक सिद्धांतों में जमीन आसमान का अंतर है।

इसाई रस्में व पर्व

(1) **बपतिस्मा (Baptism) :** इसाई धर्म में दाखिल होने के लिए जो प्रतिज्ञा अथवा दीक्षा ली जाती है और रस्म पूरी की जाती है, उसको बपतिस्मा लेना कहा जाता है। ईसा ने स्वयं सेंट जौहन से जार्डन नदी के पानी में बपतिस्मा ली थी।

(2) **हौली कम्युनियन (Holy Communication) :** इसको लार्डज़ सुपर अथवा पवित्र भोजन भी कहते हैं। यह रस्म उस भोजन की याद में मनाई जाती है जो हज़रत ईसा ने शहीद होने से एक दिन पूर्व अपने चेलों के साथ मिल कर खाया था।

(3) **क्रिसमिस (Christmas) :** यह ईसा के जन्म दिन का त्यौहार होता है जो हर साल 25 दिसंबर को मनाया जाता है। इस को बड़ा दिन भी कहते हैं।

(4) **गुड फ्राइडे (Good Friday) :** यह ईसा के सूली पर चढ़ाए जाने अथवा शहीद होने की याद में मनाया जाता है।

(5) **ईस्टर (Easter) :** यह ईसा की मृत्यु के पश्चात तीसरे दिन (रविवार को) पुनर्जीवित होने की याद में मनाया जाता है।

(6) **असैनशन (Ascension) :** यह दिन उस दिन की याद में मनाया जाता है जिस दिन इसायों के विश्वास के अनुसार पवित्र रूह ईसा के चेलों (रसूलों) पर आ उतरी थी अथवा नाज़िल हुई थी।

लॉन्च करता : जसबीर सिंघ
Mob. : 099881-60484, 62390-45985

Type Setting : Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149- 66882